ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-7* October-2020
Anthology : The Research

स्त्री विमर्श के विविध आयाम

Miscellaneous Dimensions of Female Discourse

Paper Submission: 10/10/2020, Date of Acceptance: 20/10/2020, Date of Publication: 21/10/2020

कैलाश चंद सैनी
सहायक आचार्य,
हिंदी विभाग,
श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय, सीकर,
राजस्थान, भारत

सारांश

वर्तमान कविता में स्त्री विमर्श का विषय सबसे ज्वलंत एवं प्रासंगिक है स्त्री विमर्श हेतु वर्तमान कविता ने अनेक आयाम प्रस्तुत किए हैं। स्त्री मुक्ति के संघर्ष में प्रमुख रूप से अनामिका, कात्यायनी, निर्मला पुतुल, नीलेश रघुवंशी, जया जादवानी तथा पुरुष लेखकों में अरुण कमल, उदय प्रकाश, मंगलेश डबराल, लीलाधर मंडलोई, वीरेन डंगवाल ने अपनी लेखनी चला कर इसको अभिव्यक्ति दी है। स्त्री विमर्श हेतु समकालीन कवियों ने समाज में होने वाले अत्याचारों के समस्त फलकों पर अपनी लेखनी चलाकर स्त्री को मजबूत और मुक्त करने में अहम भूमिका निभाई है। स्त्री मुक्ति का विचार वर्तमान समाज की सबसे अहम समस्या इस पर सभी ने अपना कवि धर्म निभाते हुए काव्य सृजन किया है।

The topic of female discourse is the most vivid and relevant in the current poem. The present poem has presented many dimensions for female discourse. Anamika, Katyayani, Nirmala Putul, Nilesh Raghuvanshi, Jaya Jadwani and male writers Arun Kamal, Uday Prakash, Manglesh Dabral, Leeladhar Mandloi, Viren Dangwal have given expression to this by running their writing in the struggle for female liberation. Contemporary poets have played an important role in strengthening and liberating women by running their writings on all the aspects of atrocities in society. The idea of women's liberation is the most important problem of the present society, on which everyone has created poetry by playing his poet religion.

मुख्य शब्द : प्रासंगिक, अंतर्निहित कारण, अंतर्विरोध, विकराल लहरें, कटी पतंग,नियामिका शक्ति पितृसत्तात्मक समाज, पत्थराया रुदन,स्त्री मुक्ति का संघर्ष।

Relevant, Underlying Causes, Contradiction, Gigantic Waves, Cut Kites, Niyamika Shakti Patriarchal Society, Stone Cry, Struggle For Female Liberation.

प्रस्तावना

समकालीन हिंदी कविता में स्त्री विमर्श का स्वर अंतर्निहित कारणों के साथ विभिन्न रूपों में एवं विभिन्न स्तरों पर सुनाई देता है। देखा जाए तो अधिकांश कवि स्त्री विमर्श को स्त्री के शोषण से जोड़कर देखते हैं परंतु विमर्श के अंतर्गत स्त्री का प्राचीन स्वरूप उसका वजूद उसकी गरिमा को वर्तमान संदर्भ में देखना है। जिसमें किस प्रकार स्त्री की अस्मिता गरीमा अस्तित्व उसका महत्व कम हुआ है । यही विमर्श का मुख्य विषय है। वर्तमान कवियों ने एवं कवयित्रियों ने स्त्री विमर्श के माध्यम से स्त्री मुक्ति का सार्थक प्रयास किया। आज शोषण तंत्र इतना मजबूत है कि स्त्री जुल्म के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत तक नहीं कर पाती स्त्री ।

अत्याचार अन्याय बलात्कार को मूर्ख बनकर सहती आ रही है। समकालीन कविता ने स्त्री विमर्श के विविध पहलुओं को प्रस्तुत करने का सराहनीय कार्य किया है। स्त्री के उपेक्षित एवं सुरक्षित जीवन की दर्द भरी तस्वीर को देखते हुए कहा जा सकता है कि स्त्री देश की आधी आबादी के साथ ऐसा है अमानवीय व्यवहार कर देश का विकास संभव नहीं हो सकता है स्त्री के साथ होने वाले रोज के अत्याचारों को वर्तमान कविता ने अंतर्विरोधों के साथ प्रस्तुत किया है। स्त्री शोषण की हदें इस कदर पार हो गई है कि गुरु शिष्या के पवित्र रिश्ते में भी अब सवालिया निशान लगने लगे हैं[1]। गणित की प्रॉब्लम हल करने में तथा प्रथम पुरस्कार मिलने पर खुश होती है। अध्यापक की विद्यालय में न मिलने पर अपनी खुशी के वशीभूत और पुरस्कार का श्रेय गुरु को

देने जब उनके घर पहुंचती है तब मर्यादाओं को तार तार करके वही गुरु घर में अकेला होने का फायदा उठाकर उस बालिका से दुराचार करता है। प्रसिद्ध कवयित्री किरण अग्रवाल की गांठें कविता में दुराचार की शिकार इस शिष्या की पीड़ा को इस प्रकार चित्रित किया गया है। .....

अनभिज्ञ थी जो चल रहा था सामने वाले के अंदर...

उन्होंने सहसा मसल दिए थे उसके खिले हुए उरोज आगे बढ़कर जैसे चील झपटे चिड़िया के बच्चों पर वह हतप्रभ थी..... [1]

यह हादसा घटित होने पर उसके अंदर विकराल लहरें उसी तरह पैदा हो गई जिस तरह शांत नदी एकदम भयानक रूप धारण कर ले और इस समय उसके अंदर की हलचल यह पंक्तियां चित्रित करती है.....

एक साधारण सा गणित उसकी समझ में नहीं आया था
जला दी गई थी गणित की सारी किताबें उस दिन ....
तोड़ दिए सारे मेडल...
बदल गया था सहसा अर्थ जीवन का..... [2]

हर सड़क, कॉलेज, सिनेमा हॉल,बाजार में भी स्त्री का शोषण ही होता रहता है और वह चुपचाप सहन करती है। एक लड़की पढ़ाई कर अपने गांव लौटते वक्त किस मंजर का सामना करती है इन पंक्तियों में प्रस्तुत है...

घुसना चाहती थी भागी हुई भीड़ में
सेकंड क्लास के एक कंपार्टमेंट में .....
कि कई हाथ आए और नोचे गए उसके उन्नत उरोज.....
वह खिसक गई पीछे
छूट गई थी उसकी ट्रेन । [3]

उस दिन उस पीड़िता ने महसूस किया और डायरी के इन शब्दों में लिखा.....

आज मैंने आदमी की खाल ओढ़े जानवरों को देखा....[4]

इसी प्रकार एक दूसरी औरत का चित्र जो अभावग्रस्त जीवन जीती है वह पहले तो लोगों के घरों में बर्तन मांजती है परंतु गुजारा न होने पर अब ठेकेदार के पास काम करती है.....

वह तोड़ती है...
पत्थर धोती है सीमेंट की बोरियां फर्श बनाती है,
ढलाई करती है छत की ....
और वह सब कुछ जो ठेकेदार कहता है..... [5]

कविता की अंतिम दो पंक्तियों से जाहिर है कि वह औरत मजबूरी में सब कुछ करने को तैयार हैप अनुचित– उचित नैतिक– अनैतिक उसके भूखे बच्चे आवारा कुत्तों की तरह गलियों में घूमते हैं और उनमें भी लड़कियां जो मासूम है प उनकी दास्तान तो दर्दनाक से भी बढ़कर है जिसका प्रमाण इन पंक्तियों में परिलक्षित होता है.....

मुट्ठी भर भुने चने या मूंगफली देकर ....
कोई भी उनकी बच्चियों को फुसला ले जाता है
वह नहीं जानती बलात्कार शब्द वे
सुबक–सुबक कर रोती है बस और अपनी नन्ही नन्ही मैली हथेलियों से.....
अपने धूल में सने आंसू पौंछती जाती है..... [6]

आज स्त्री शोषण मर्यादा नैतिकता की सारी सीमाएं लांघ चुका है वर्तमान शोषण का चेहरा इतना भयानक है कि विश्वास नहीं होता है स्त्री आज अपने घर में ही भाई, बाप की नजरों से भी सुरक्षित नहीं हैप रिश्ते सिर्फ नाम मात्र के हैं बाकी सब तार–तार हो चुका है देखिए.....

उसके लड़के बहनों की दलाली करते हैं
और कटी पतंग के लिए आपस में लड़ते हैं.... [7]

स्त्री विमर्श में यूं तो शोषण की बेड़ियों में जकड़ी स्त्री की व्यथा भी है तो स्वच्छंद होकर नारीत्व को त्याग कर विचरण करने वाली स्त्री पर भी चिंतन मनन किया जा रहा है प कहीं स्त्री वास्तव में लाचार और बेबस है तो कहीं वह अपने तन की नुमाइश भी करती नजर आती हैप स्त्री एक है और उसके रूप अनेक हैं और भूमिकाएं भी अनेक हैंप एक स्त्री अपने सुहाग की लंबी उम्र के लिए करवा चौथ का व्रत रखती हुई उसके पति का घर लौटने का इंतजार करती है । वह शराबी पति रात को किसी और महिला के घर से लड़खड़ा ता हुआ आता है प्रस्तुत है .....

एक औरत बालकनी में आधी रात खड़ी हुई.....
इंतजार करती है....
अपनी जैसी ही असुरक्षित और बेबस किसी दूसरी औरत के घर से.....
लौटने वाले अपने शराबी पति का.....[8]

समकालीन कविता ने स्त्री विमर्श के विविध पहलुओं को प्रस्तुत करने का सराहनीय कार्य किया है। स्त्री के उपेक्षित असुरक्षित जीवन की दर्द भरी तस्वीर को देखते हुए कहा जा सकता है कि स्त्री यानी देश की मूल नियामिका शक्ति के साथ कितना क्रूर और अमानवीय व्यवहार हो रहा है। यह वर्तमान की सबसे गंभीर समस्या है। वर्तमान कविता ने इस समस्या पर अपनी बेबाक लेखनी चलाकर समाज में व्याप्त अंतर्विरोधों को पाटने का प्रयास किया है। जब भारत में स्त्री पुरुष को बराबर संवैधानिक अधिकार प्राप्त हैं तो यह दुर्व्यवहार क्यों? पुरुष की सहगामी होकर भी वह उसके अधीन क्यों है। पुरुषों का वेश्या गमन परनारी गमन जायज है जबकि स्त्री से उसकी पवित्रता की गारंटी मांगी जाती है यह लिंगभेद की राजनीति आज क्यों व्याप्त है हमारे इस आदर्शवादी समाज में ।

आज स्त्री अपनी दयनीय दशा के लिए कुछ हद तक स्वयं भी जिम्मेदार है परंतु इसका मतलब यह तो नहीं है कि जो बाकी नारियां शोषित और पद दलित हैं उनको हाशिए पर छोड़ दिया जाए।

समकालीन कविता ने स्त्री की दयनीय दशा के लिए जिम्मेदार पितृसत्तात्मक समाज का पर्दाफाश कर आज के सच से सब का परिचय करवाया है.....

धरती के इस छोर से उस छोर तक
मुट्ठी भर सवाल लिए मैं

तलाश रही हूं सदियों से निरंतर अपनी जमीन,
अपना घर, अपने होने का अर्थ .....[9]

''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता,, का उद्घोष करने वाले देश में आज भी स्त्रियों को जीवित व स्वतंत्र रहने का पुरुषों जितना अधिकार नहीं है। जीवित रहने और जीवन को पूर्ण रूप से जीने में अंतर है। यह ध्यान रखा जाए तो स्त्री पुरुष विषमता का विष और गाढ़ा व भयावह तथा सर्वग्रासी नजर आता है। स्त्री इस विष की प्रत्यक्ष शिकार है।

इतिहास और समाज में इस धिमे विष की जड़ें गहरी हैं ।
सीमोन द बोउवार ने लिखा है..... हत्वा का जन्म आदम का मन बहलाने के लिए हुआ है .... वह भी उसी की पसलियों की हड्डी से [10]
अर्धनारीश्वर का रूप मूलत: है शिव का ही ।

अरविंद जैन कहते हैं कि अर्धनारीश्वर का अर्थ आधी नारी और आधा नर नहीं है बल्कि आधी नारी है और आधा ईश्वर है नर....यानी आधी नारी का ईश्वर 11 स्त्री पर होने वाले निरंतर अत्याचारों से वह हमेशा पथराई हुई रहती है । गगन गिल की पंक्तियों में दृष्टव्य है .....

सांस की नली से उतरती हैं सीढ़ियां दर सीढ़ियां....
उसकी हंसी की गूंजे
थाम कर एक दूसरे का हाथ डरते डरते एक चीज अंधेरे खड्ड में गिरती है....धप्प से।
बहुत सारा रुदन पथराया पड़ा है वहां पर..... [12]
बाहर हंसी की गूंजे..... भीतर पथराया रुदन....

यही है वर्तमान स्त्री का रूप।

उसकी हंसी को मीडिया ने बाजार में व्यवसायिक बना दिया है। इसलिए आवरण का इस्तेमाल समकालीन कविता में और जीवन में बढ़ता जा रहा है। अनामिका ने कहा है हंसी को निश्चित ही नए जमाने का घूंघट कहां है .....[13]

इस रूप को थोड़ा आगे बढ़ाया जाए तो बड़े आधुनिक दिखाई देने वाले हंसी के कारोबारी स्त्री पर घुंघट, बुर्के को नए सिरे से लगने वाले पंडित और मौलवी नजर आएंगे।

समकालीन कविता ने स्त्रियों की खामोशी को सुना है प्रतिरोध व्यक्त किया हैप स्त्री को उन्होंने आवाज दी है राजेश जोशी ने कहा है.....

वह जाने क्या क्या कुछ बोले जाती थी लगातार बहुत जल्दी जल्दी.....
डरती थी कि बोले जाने के बीच चुप की जरा सी संध बनी नहीं की उछलकर वह सब कुछ आ जाएगा बाहर.....
इतने जतन से जिसे छिपाने की कोशिश करती थी वह जाने कब से 14

यातना की तीव्रता इतनी है कि हर यातना स्वभाविक लगने लगती है स्त्रियों में गालियां सुनने का सील विकसित हो रहा है आदत बनने लगती है अनामिका अपने शब्दों में कहती हैं.....

वैसे तो रहती है शाश्वत डाइटिंग पर रहती है स्त्रियां
तो क्या है न जी.....? है ना जी....?[15]

मस्ती हंसी खुशी की जगह गालियों या मारपीट ने ले ली है स्त्रियां उन्हें गोलगप्पे मानती हैं। इससे सुनना सहना आसान हो जाता है। यातनाएं अभाव और दमन से जन्म लेती हैं अभाव और दमन स्त्री जीवन के अंग हैं। यह स्त्री की भूखी प्यासी इच्छाओं से भी ज्ञात होती है कात्यायनी ने एक भूतपूर्व नगरवधू की दुर्ग पति से प्रार्थना में ऐसी ही तड़पती इच्छाओं के बारे में बताया है.....

एक वृक्ष के तने से पीठ टिकाकर कम से कम एक बार .....
भले ही वह जिंदगी में आखिरी बार हो.....
अपने मन से एक गीत गाना है मुझे
जिसकी कभी किसी ने फरमाइश न की हो.....
जलते रेगिस्तान में ही सही ....
कम से कम एक बार मैं
अपने लिए नृत्य करना चाहती हूं।[16]

स्त्रीत्व का बहुमंडित अर्थ है.....
दूसरों के लिए जीना।

इस कोशिश में किसी तरह जीवित रह लेना । दूसरों के लिए जीना किसी को अपनी जरूरतें अपने अभाव और यहां तक कि अपना अस्तित्व भी देखने लायक नहीं छोड़ता।

स्त्रीत्व के तथाकथित आदर्श का अंतर्विरोध है कि जिसे दूसरों के लिए फूल से भी कोमल हृदय रखना है। उसी को अपने लिए पत्थर से भी कठोर होना ।

अनीता वर्मा अपने शब्दों में चिड़िया सी चहकती बेटियों की आवाज बनकर लिखती हैं.....

अभी मैं प्रेम से भरी हुई हूं...
पूरी दुनिया शिशु सी लगती है
मैं देख सकती हूं किसी को कुछ भी
रात, दिन, वर्ष, पल अनंत.....
अभी तारे मेरी आंखों में चमकते हैं
मर्म से उठते हैं कपास के फूल । [17]

तारे अभी चमकते हैं अर्थात बाद में बुझ भी सकते हैं अंधकार अभी सिर्फ केशो में है अर्थात बाद में केसों से उतरकर पूरी स्त्री को लील सकता है अभी जीवन का सहज उल्लास है कल का भरोसा नहीं यह चंद्रमा ग्रहण की आशंका से त्रस्त है स्त्री अंधकार को अपने केशों में बांधे रखती है दुख को प्रसारित होने से रोकती है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र के माध्यम से वर्तमान की सबसे गंभीर समस्या स्त्री मुक्ति की है। इससे समाज चिंतकों, सुधी पाठकों को अवगत करवाना तथा स्त्री विमर्श में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना आज स्त्री के साथ बलात्कार,शोषण, दमन में जिन अत्याचारी पुरुषों की महती भूमिका है, उसको समाज के सम्मुख यथार्थ के साथ प्रस्तुत करना और महिला क्रांति को एक आवाज देना ही मुख्य उद्देश्य है।

निष्कर्ष

समस्त विवेचन और विश्लेषण से हम यह कह सकते हैं कि वर्तमान कविता में स्त्री विमर्श को विभिन्न दिशाओं में विवेचन और विश्लेषण किया गया। स्त्री के

साथ होने वाले अत्याचार जिसमें बलात्कार, दमन, शोषण आदि के फलक मुख्य हैं।स्त्री मुक्ति का संघर्ष अकेली स्त्री के विरोध करने से एवं उसके क्रांति करने से नहीं होगा, इसके लिए पुरुष की स्वस्थ मानसिकता एवं स्त्री के प्रति एक श्रेष्ठ दृष्टिकोण को अपनाने से ही संभव हो पाएगा।

जैसा प्रेमचंद ने गोदान में कहा है कि स्त्री पुरुष से उतनी ही आगे है जितना प्रकाश अंधेरे से.... जिस विभूति को प्राप्त करने के लिए पुरुष सदियों से पैर मार रहा है उस विभूति को स्त्री ने सदियों पहले प्राप्त कर लिया।

तो निष्कर्ष है कि हम स्त्री की महिमा और गरिमा को उसी प्रकार स्थापित करें जिसकी वह प्राचीन काल से हकदार थी और आज भी है। स्त्री का संपूर्ण जीवन ही इस संसार के निर्माण में समर्पित है इसलिए वह शक्ति स्वरूपा एवं नियामिका है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *किरण अग्रवाल गांठे, उन्नयन पृष्ठ 151*
2. *वही पृष्ठ 152*
3. *वही पृष्ठ 152*
4. *वही पृष्ठ 152*
5. *किरण अग्रवाल यह भी उर्मिला है, उन्नयन पृष्ठ 154*
6. *वही पृष्ठ 154*
7. *वही पृष्ठ 154*
8. *उदय प्रकाश – रात में हारमोनियम पृष्ठ 31*
9. *निर्मला पुतुल– नगाड़े की तरह बजते शब्द पृष्ठ 30*
10. *प्रभा खेतान स्त्री उपेक्षिता, सीमोन द बोउवार पृष्ठ 139*
11. *वसुधा –59– 60 अक्टूबर 2003 से मार्च 2004 पृष्ठ 541*
12. *ए अरविंदाक्षन द्वारा उद्धृत समकालीन हिंदी कविता पृष्ठ 131*
13. *अनामिका, कविता में औरत पृष्ठ 122*
14. *राजेश जोशी चांद की वर्तनी पृष्ठ 48*
15. *अनामिका, कविता में औरत पृष्ठ 127–28*
16. *कात्यायनी इस पुरुष पूर्ण समय में पृष्ठ 65*
17. *वसुधा 59 60 स्त्री मुक्ति का सपना पृष्ठ 161*